

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे ।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए ।
आठों सागर आठ जिमी ये, पचीस पक्ष हैं धाम धनी के ॥

नूर नीर क्षीर दधि सागर, घृत मधु इक ठौरा ।
रस सर्वरस सागर, बिन मोमन न पावै औरा ॥

इसके अरस वतन बताया, इसके सुख पेड़ का पाया ॥ १/२६
अब आओ रे इसक भानूं हाम, देखूं वतन अपना निज धामा ।

करूं चरन तले विश्राम, विलसों पियाजी सों प्रेम कामा ॥ ३/ १
एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुखा ।

इसक याहीसों आवहीं, याहीसों होइए सनमुखा ॥ ४/७
बैठते उठते चलते, सुपन सोवत जागृता ।

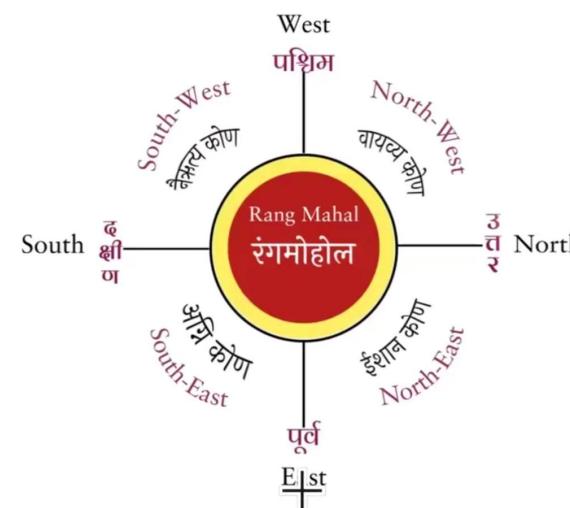
खाते पीते खेलते, सुख लीजे सब विध इता ॥ ४/ १६



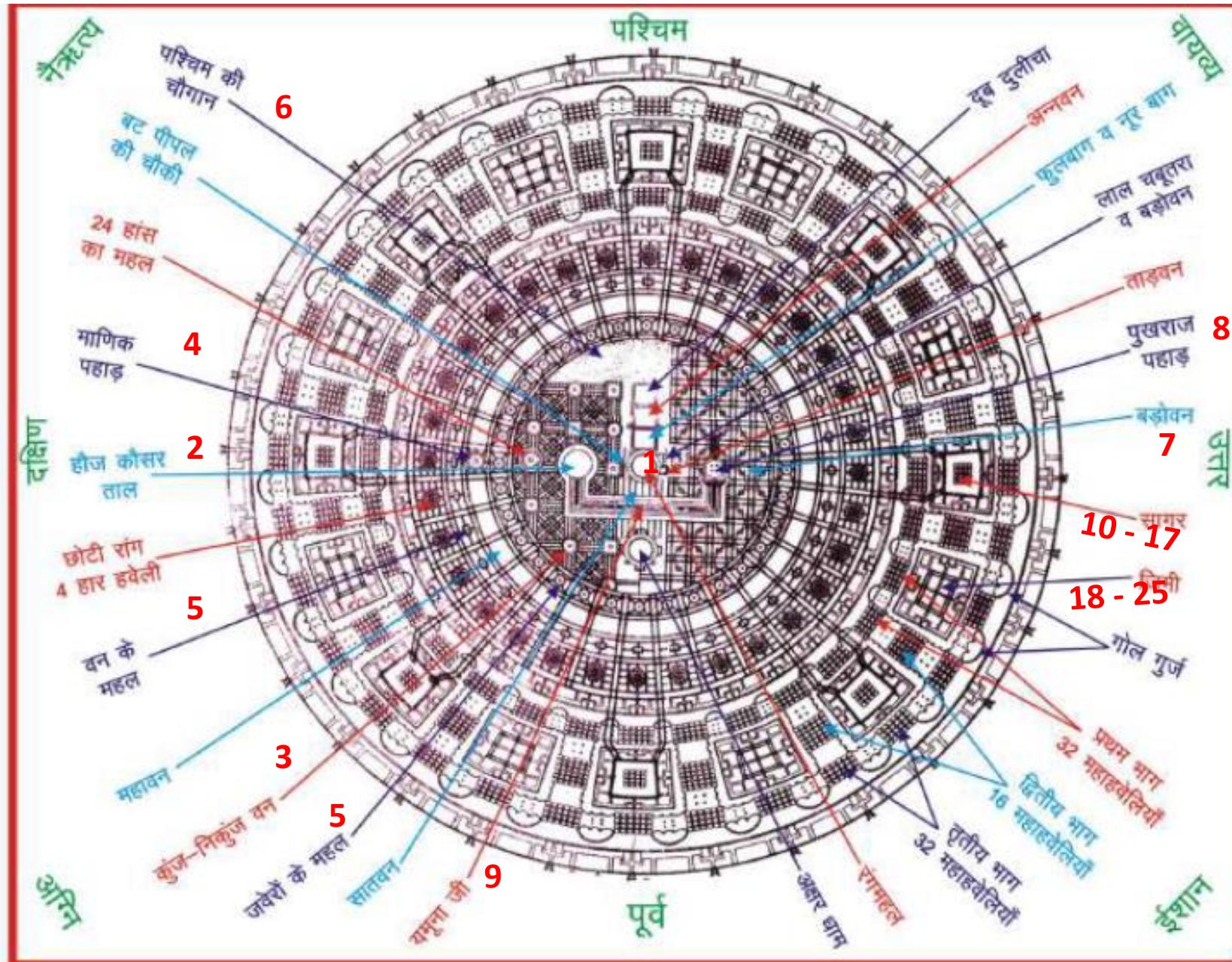
1. रंगमहल चांदनी चौक
2. हौज कौसर ताल
3. कुंज निकुंज वन
4. माणिक महल
5. जवेरों की नहरों/वन के नहरों
6. पश्चिम चोगान
7. बड़ावन
8. पुखराजी महल
9. यमुनाजी

10 to 17 आठ सागर

नूर
नीर
क्षीर
दधि
घृत
मधु
इक
रस
सर्वरस



18 to 25 आठ जिमी

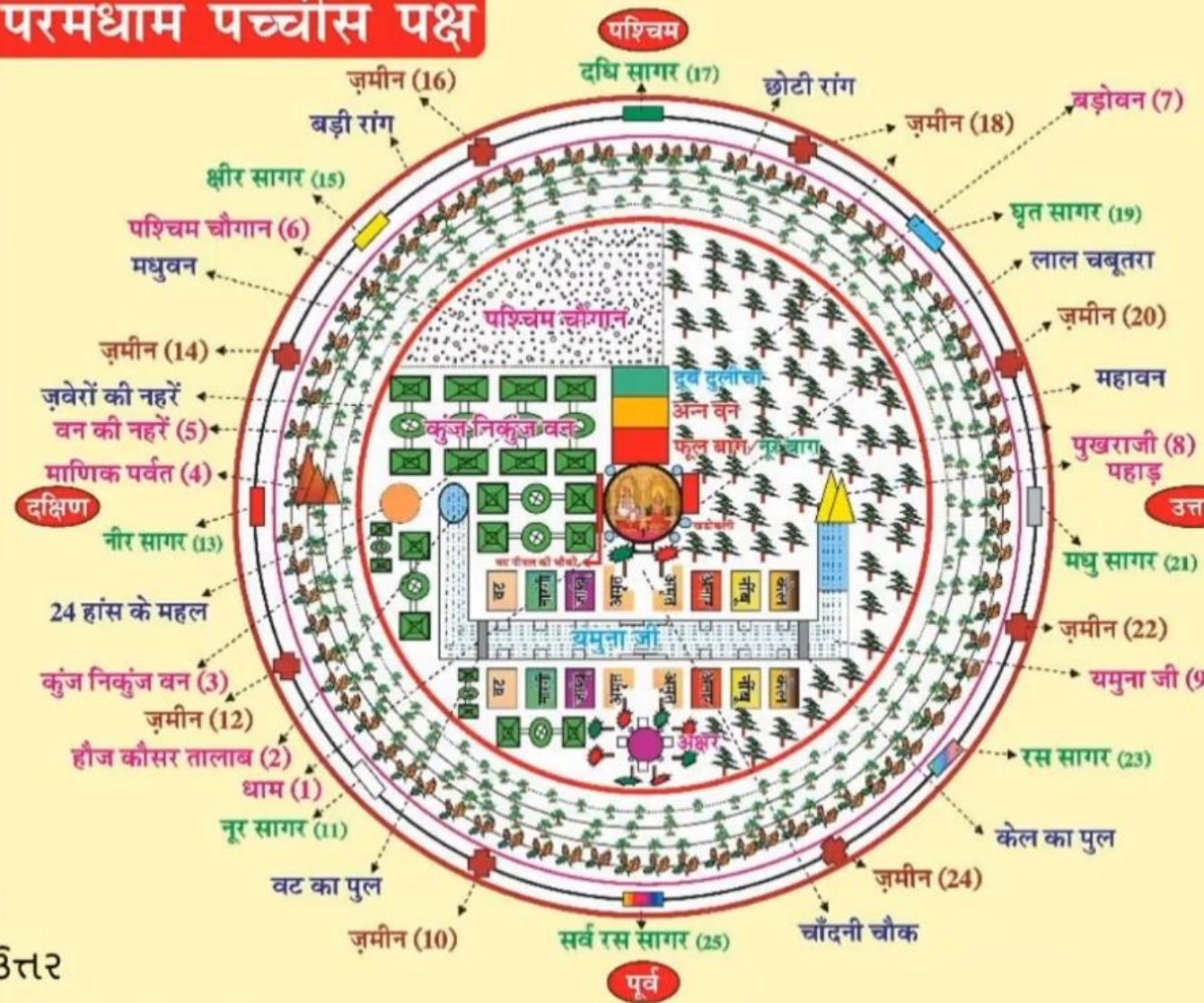


1 2 3 4 5
धाम तालाब कुंजवन सोहे, माणिक नेहरें वन की जोहे।
6 पश्विम चौगान 7 बड़ोवन कहिए 8 पुखराजी 9 यमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पचीस पक्ष हैं धाम धनी के॥
10-17 18-25

1. रंगमहल चांदनी चौक
2. हौज कौसर ताल
3. कुंज निकुंज वन
4. माणिक महल
5. जवरों की नहरों / वन के नहरों
6. पश्विम चौगान
7. बड़ोवन
8. पुखराजी महल
9. यमुनाजी
- 10 to 17 आठ सागर
- 18 to 25 आठ जिमी



परमधाम पच्चीस पक्ष



धाम तालाब कुंज वन जोहे,
मानिक नहरें वन की सोहे।
पश्चिम चौगान बड़ो वन कहिए,
पुखराजी यमुना जी लहिए।
आठ सागर आठ जिमी के,
ये पच्चीस पक्ष श्री धाम धनी के॥

श्री परमधाम में आठ सागर

सागर	रंग	बातुरी अर्थ
नूर	सफेद	राजकी की शोणा
नीर	लाल	मूर्तीसाला की बैठक की शोणा
क्षीर	पीला	एक दिनी (वाहन)
दधि	हरा	दुगल स्वरूप का दिव्य नूरग
घृत	आमासी	इक (प्रेम) का सागर
मधु	श्वाम	इलम (ज्ञान) का सागर
रस	दस रंग	निश्चय (सम्बन्ध) का सागर
सर्वरस	सर्व रंग	मेहर (कृष्ण) का सागर

श्री परमधाम की सात परिक्रमा

प्रथम परिक्रमा- रो भवन का चांदी चौक से दक्षिण में वट बीचल की चौकी, परिक्रम में चल जाए, नूर बगा, उत्तर में लाल चबूतरा एवं ताह वन से पूर्व में चारनों चौक।

द्वितीय परिक्रमा- पूर्व में अमृत वन के भव्य से जावू चाटी और छट से दक्षिण में लूट लिखुन वा, दीव कीमत लालाम एवं चैमोन हाँस का बहल से पश्चिम में पश्चिम की शोणा, दूल दुलिला (गलीना) एवं अन वन से उत्तर में मधुवन महावन और पुखराजी चौक से पूर्व में केल वन पुल, केल नीबू और अचार वन से अनुष्ठ वन के मध्य लाप।

तृतीय परिक्रमा- ज्वरों की जारी जारी तरफ।

चौथी परिक्रमा- माणिक पहाड़ और चारू और चोरीराम।

पांचमी परिक्रमा- चारों तरफ वन की नहरों के महाल।

छठी परिक्रमा- छोटी रंग- चार द्वार इवरेली नहरं तरफ।

सातमी परिक्रमा- बड़ी रंग, आठ सागर आठ जिमी चारों तरफ।

नूर नीर क्षीर दधि, घृत मधु एक ठार।
रस सर्वरस सागर, बिना मोमिन न पावे कोई और॥

निश दिन ग्रहिये प्रेमसों, श्री युगल स्वरूप के चरण।
निर्मल होना याही सों और धाम वरनन॥

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पचीस पक्ष हैं धाम धनी के !!



Paramdham - : परमधाम पचीस पक्ष



OR

